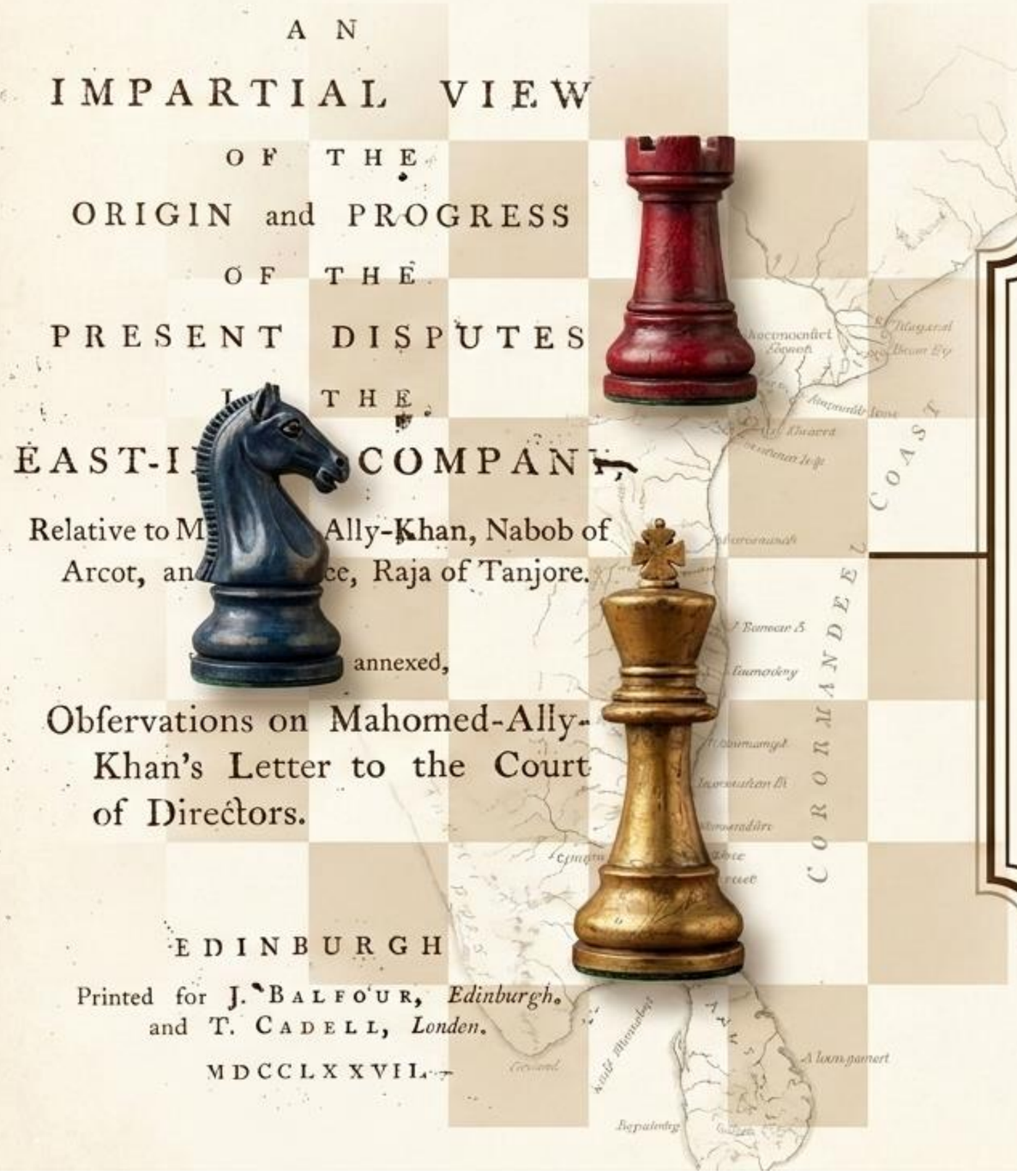

अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि द्वारा

डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

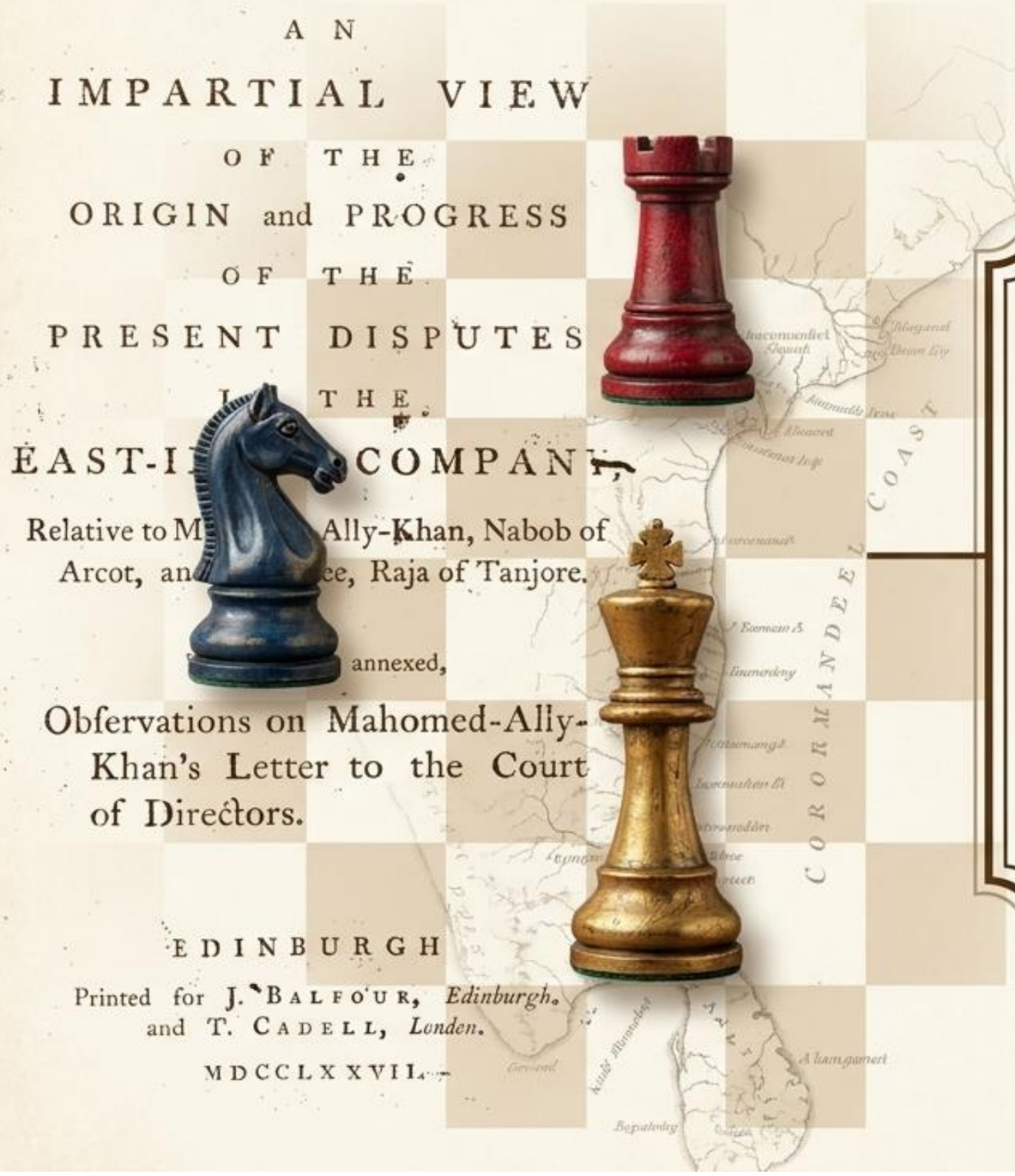

कर्नाटक का शतरंज: कंपनी और नवाबों का सत्ता संघर्ष

18वीं सदी के भारत में कैसे महत्वाकांक्षा, विश्वासघात और यूरोपीय कूटनीति ने इतिहास की दिशा बदल दी (1710-1751)

कर्नाटक में सत्ता का संघर्ष (1740-1751): ईस्ट इंडिया कंपनी और क्षेत्रीय राजनीति

1740-1748: यूरोपीय शक्तियों का उदय और टकराव

1746: मद्रास पर फ्रांसीसी कब्जा

फ्रांसीसी कमांडर ला बोर्डोनिस ने अंग्रेजों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर मद्रास पर नियंत्रण किया।

1748: पांडिचेरी की असफल घेराबंदी

ब्रिटिश सेना ने पांडिचेरी को जीतने का प्रयास किया, लेकिन फ्रांसीसी रक्षा कौशल के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा।

यूरोपीय सैन्य श्रेष्ठता का प्रदर्शन

डुप्लेक्स ने साबित किया कि एक अनुशासित यूरोपीय बटालियन हजारों भारतीय सैनिकों पर भारी पड़ सकती है।

1749-1751: राजनीतिक षड्यंत्र और पतन

1749: देवी-कोट्टाह का अधिग्रहण

अंग्रेजों ने तंजौर के आंतरिक विवादों का फायदा उठाकर सामरिक रूप से महत्वपूर्ण देवी-कोट्टाह किले पर कब्जा किया।

विश्वासघात और हत्याओं का दौर

नजार-ज़िंग और मुज़फ़्फ़र-ज़िंग की हत्याओं ने दक्कन की राजनीति में अस्थिरता और भ्रष्टाचार को चरम पर पहुँचा दिया।

डुप्लेक्स की कूटनीतिक जीत

फ्रांसीसी गवर्नर डुप्लेक्स ने रिश्वत और बादों के जरिए स्थानीय रईसों को अपनी ओर मिलाकर भारी धन अर्जित किया।

यह इन्फोग्राफिक 1740-1751 के दौरान कर्नाटक क्षेत्र में हुए सत्ता संघर्ष को दर्शाता है। यह वह समय था जब मुगल साम्राज्य की कमजोरी का फायदा उठाकर ब्रिटिश और फ्रांसीसी कंपनियों ने स्थानीय नवाबों और राजाओं के आपसी विवादों में हस्तक्षेप कर अपनी शक्ति का विस्तार किया।

18वीं सदी का भारतीय प्रशासनिक ढांचा

मुगल सम्राट (दिल्ली)
साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी

सूबेदार (Subah-dar)
दक्कन का निज़ाम-उल-मुल्क।
व्यावहारिक रूप से स्वतंत्र।

नवाब (Nabobs) और राजा
आर्कोट, तंजौर और त्रिचनापल्ली के शासक जो कर (Tribute) देते थे।

1738 का प्रभाव

नादिर शाह के विनाशकारी आक्रमण के बाद यह प्रणाली दरक गई। सत्ता का पूरी तरह से विकेंद्रीकरण हो गया।

आर्कोट में महत्वाकांक्षा का उदय: सादतुल्लाह के बाद (1710+)

सादतुल्लाह
(मृत्यु 1710)

दोस्त अली
(भतीजा)
निज़ाम की अनुमति के बिना खुद को नवाब घोषित किया।

निज़ाम की अवहेलना
(Defiance)

चंदा साहेब
(दामाद)
अत्यधिक महत्वाकांक्षी और चतुर रणनीतिकार।

त्रिचनापल्ली का धोखा (1736):

चंदा साहेब ने कुरान पर झूठी कसम खाकर त्रिचनापल्ली की रानी का विश्वास जीता, उसे कैद किया और राज्य हड़प लिया। निज़ाम यह सब देख रहा था और बदला लेने की योजना बना रहा था।

मराठों का कहर: कारण और प्रभाव (1740-1741)

कारण (The Catalyst)

नवाबों द्वारा मराठों को वार्षिक चौथ न देना और निज़ाम द्वारा मराठों को गुप्त रूप से उकसाना।

विनाशकारी आक्रमण (**मई** 1740)

रघुजी भोंसले के नेतृत्व में 100,000 मराठों का हमला। युद्ध में नवाब दोस्त अली की मौत।

कारावास (1741)

मराठों ने त्रिचनापल्ली पर कब्ज़ा कर लिया। चंदा साहेब को बंदी बनाकर कारावास में डाल दिया गया।

मराठा घुड़सवार अपनी फुर्ती, अचूक रणनीति और लंबी दूरी तय करने की क्षमता के लिए पूरे भारत में खौफ का पर्याय थे।

विश्वसघात का चक्र: एक खूनी उत्तराधिकार

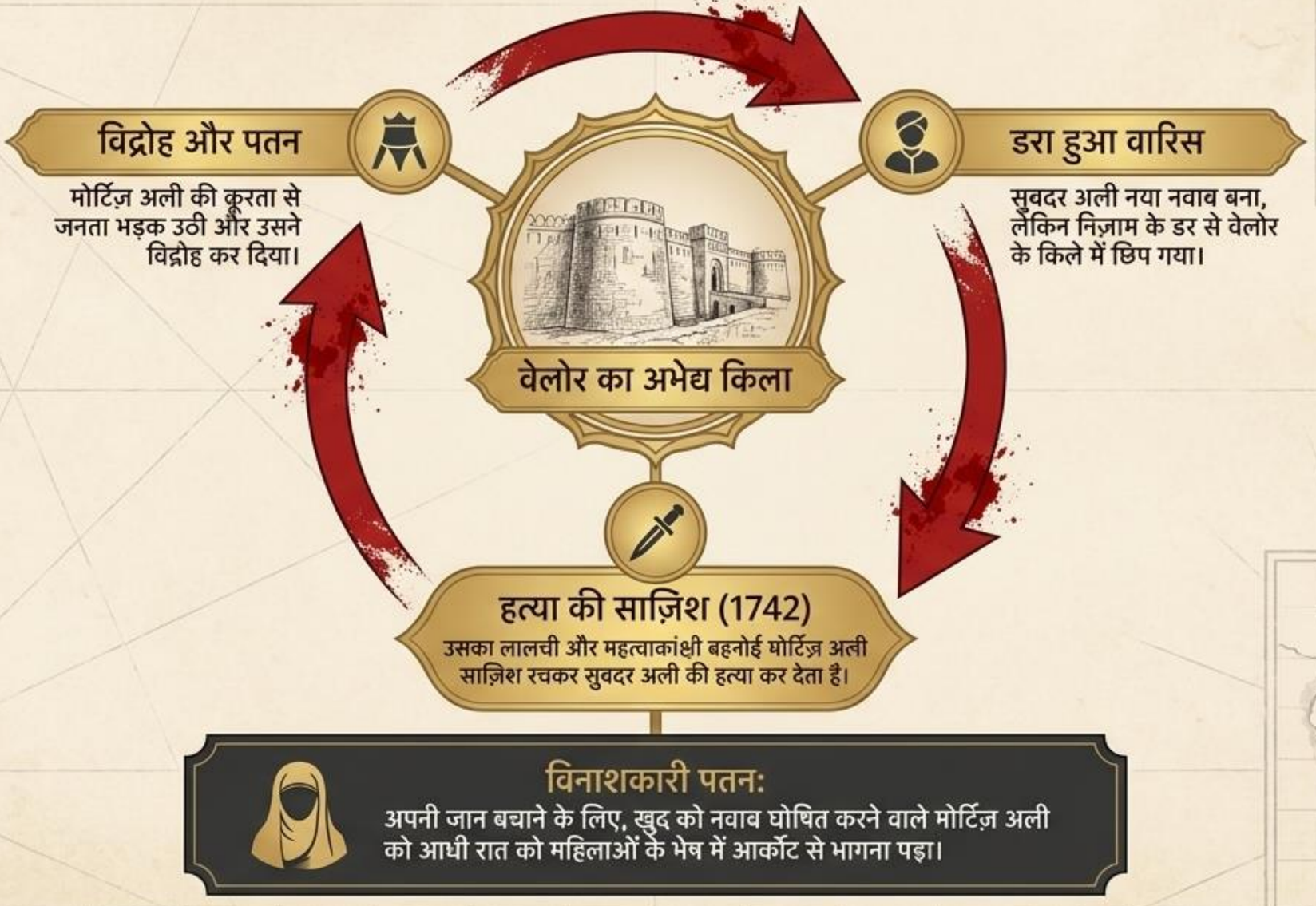

विनाशकारी पतन:
अपनी जान बचाने के लिए, खुद को नवाब घोषित करने वाले मोर्टिज़ अली को आधी रात को महिलाओं के भेष में आर्कोट से भागना पड़ा।

अनवरुद्दीन खान का प्रवेश: एक रहस्यमयी हत्या

संरक्षक की नियुक्ति (1743)

निज़ाम ने अपने सैन्य कमांडर अनवरुद्दीन खान को युवा राजकुमार का संरक्षक नियुक्त किया।

सईद महमूद
(युवा राजकुमार)

दिनदहाड़े हत्या (1744)

आर्कोट किले के अंदर पठाण सैनिकों द्वारा युवा राजकुमार की रहस्यमयी ढंग से हत्या।

नया नवाब

अनवरुद्दीन खान आर्कोट का पूर्ण नवाब बन गया।

क्या यह एक सुनियोजित साजिश थी? जनता का मानना था कि संरक्षक अनवरुद्दीन और हत्यारा मोर्टिज़ अली, दोनों इस साजिश में शामिल थे।

यूरोपीय प्रतिद्वद्विता का भारतीय रंगमंच (1744-1746)

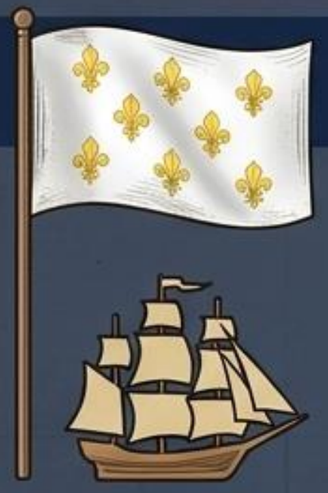

फ्रांसीसी कंपनी

एडमिरल डे ला बोर्दोन्नैस के नेतृत्व में आक्रामक विस्तार। मद्रास पर सफल हमला और कब्ज़ा।

अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी

शुरुआती दौर में रक्षात्मक स्थिति। यूरोप के युद्ध की आंच अब भारतीय तटों तक पहुँच चुकी थी।

सैन्य इतिहास का टर्निंग पॉइंट (सेंट थॉमस का युद्ध)

नवाब ने फ्रांसीसियों को खदेड़ने के लिए 10,000 सैनिकों की विशाल सेना भेजी। लेकिन एक छोटी सी, अनुशासित फ्रांसीसी बटालियन ने उन्हें आसानी से हरा दिया। पहली बार यह साबित हुआ कि यूरोपीय अनुशासन के सामने हज़ारों की भारतीय सेनाएं भी कमज़ोर थीं।

मास्टरमाइंड: जोसेफ डुप्लेक्स की साम्राज्यवादी दृष्टि

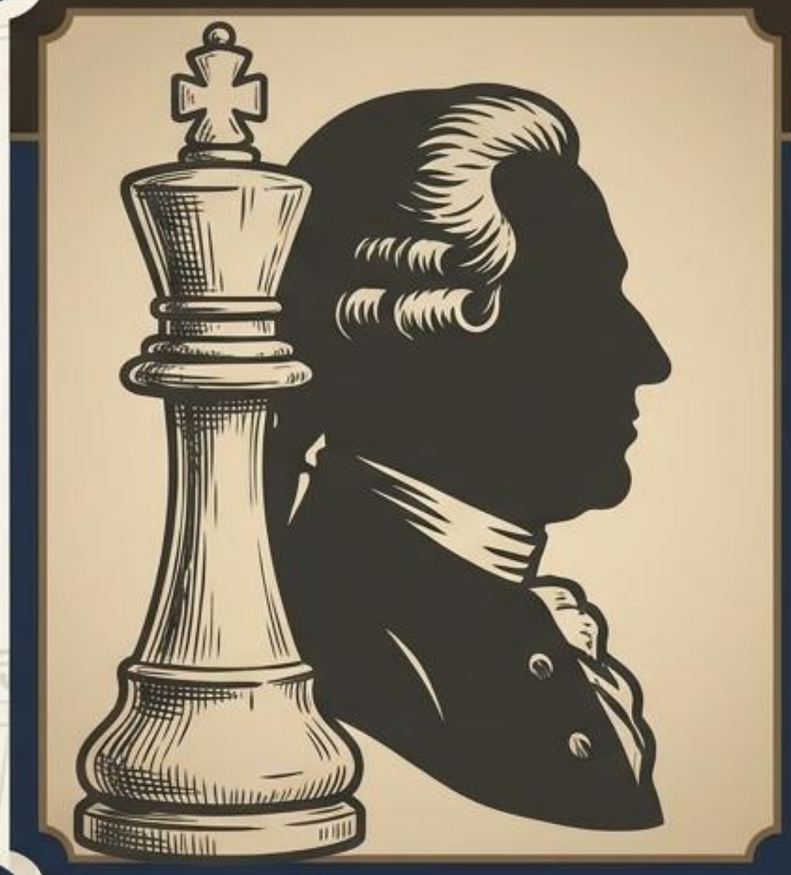

जोसेफ डुप्लेक्स (Mr. Dupleix) - पांडिचेरी का फ्रांसीसी गवर्नर

Pillar 1.

विशेषताएं

चतुर, अत्यंत दूरदर्शी और भारतीय राजाओं की जटिल राजनीति का सबसे गहरा जानकार।

Pillar 2.

रणनीति (Tactics)

केवल सैन्य शक्ति नहीं, बल्कि कूटनीति, जासूसी, रिश्वत और महत्वाकांक्षी भारतीय भारतीय गुटों के बीच फूट का भरपूर फायदा उठाना।

Pillar 3.

महात्वाकांक्षी उद्देश्य (The Vision)

भारत में केवल व्यापारिक लाभ नहीं कमाना, बल्कि एक विशाल और स्थायी 'फ्रांसीसी साम्राज्य' की नींव रखना।

NotebookLM

तंजौर की गलतियाँ: ब्रिटिश अवसरवाद (1749)

Case Study Diagnostic Box

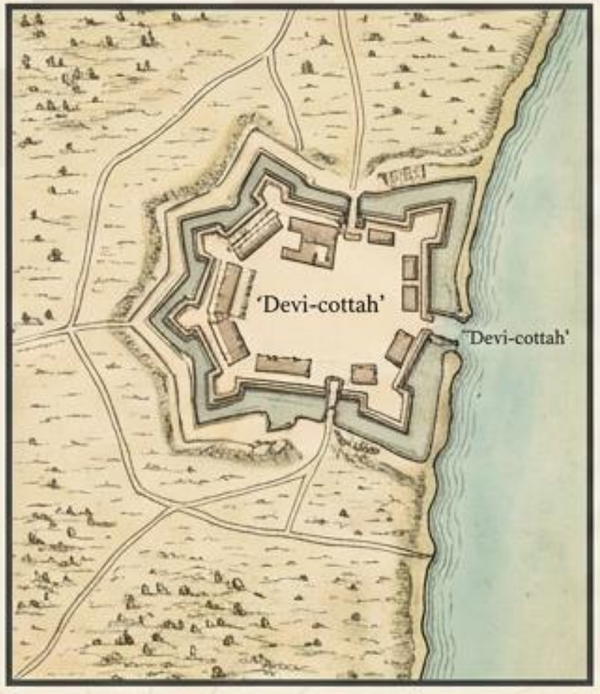

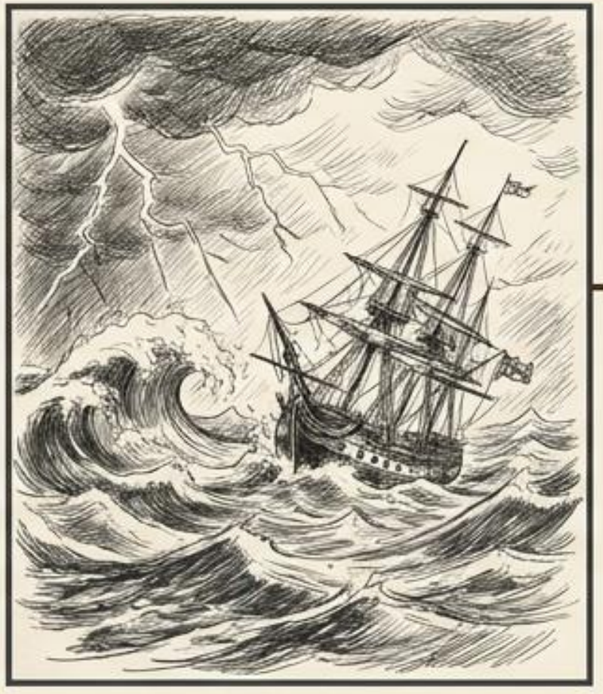

बहाना (The Pretext)
अंग्रेजों ने तंजौर के अपदस्थ राजा की मदद करने का बहाना बनाया, ताकि देवी-कोटा किले पर कब्ज़ा किया जा सके।

विनाशकारी अभियान (The Disasters)
यह अभियान मूर्खतापूर्ण साबित हुआ। भारी मानसून तूफान में उनका 74-तोपों वाला जहाज 'नमूर' डूब गया। तंजौर की सेना ने डटकर मुकाबला किया।

समझौता (The Compromise)
अंततः एक संधि हुई जिससे अंग्रेजों को देवी-कोटा किला और पेंशन मिल गई।

Insight

निष्कर्ष: यह घटना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अंग्रेज़ भी साम्राज्यवादी विस्तार के लिए किसी भी अनुचित दावे का समर्थन करने और भारतीय राजनीति में उलझने को पूरी तरह तैयार थे।

NotebookLM

प्रॉक्सी वॉर का मंच तैयार: दक्कन का उत्तराधिकार

सिंहासन: दक्कन की सूबेदारी

Faction 1: The Rebels

दक्कन का दावेदार
मुजफ्फर जंग (पोता)

आर्कोट का दावेदार
चंदा साहेब

यूरोपीय समर्थक:
फ्रांसीसी कंपनी (डुप्लेक्स)

Faction 2: The Incumbents

दक्कन का शासक
नासिर जंग (बेटा)

आर्कोट का नवाब
अनवरुद्दीन खान

यूरोपीय समर्थक:
अंग्रेजी कंपनी (मेजर लॉरेंस)

यह अब सिर्फ दो भारतीय राजकुमारों का युद्ध नहीं था; यह ब्रिटेन और फ्रांस के बीच का भारत में प्रॉक्सी वॉर (Proxy War) बन चुका था।

अमूर का युद्ध - 1749

मुजफ्फर जंग + चंदा साहेब की सेना
40,000 सैनिक

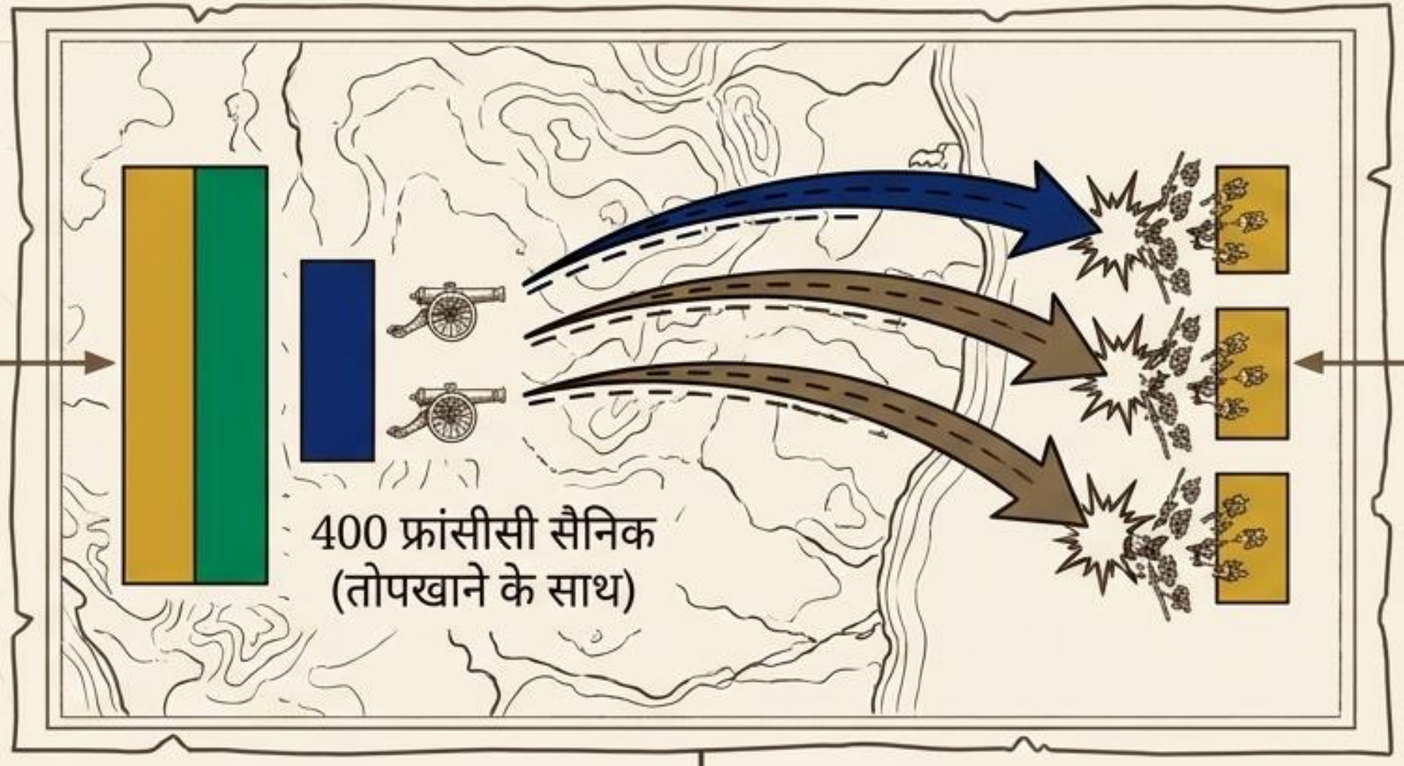

अनवरुद्दीन खान की सेना
20,000 सैनिक

हमला (The Clash):
अनुशासित फ्रांसीसी तोपखाने ने भीषण तबाही मचाई और अनवरुद्दीन की सेना की रक्षा पंक्तियों को भेद दिया।

नवाब का पतन:
अनवरुद्दीन खान ने अदम्य साहस दिखाया, लेकिन युद्ध के मैदान में छाती में गोली लगने से उसकी मौत हो गई।

परिणाम (The Aftermath):
विजयी चंदा साहेब को आर्कोट का नया नवाब घोषित कर दिया गया।

कूटनीति और भ्रष्टाचार: साम्राज्य खरीदने की कला

नासिर जंग की विशालकाय सेना (The Dilemma)

नासिर जंग की विशालकाय सेना (300,000 सैनिक, 800 तोपें)। सैन्य शक्ति से इन्हें हराना लगभग असंभव था।

मास्टरस्ट्रोक: डुप्लेक्स की चाल (The Bribery)

मास्टरस्ट्रोक: डुप्लेक्स ने सैन्य बल के बजाय भ्रष्टाचार का सहारा लिया। उसने नासिर जंग की सेना के असंतुष्ट पठाण सरदारों (कडप्पा, कर्नूल) को गुप्त रूप से भारी रिश्वत दी।

परिणाम: विश्वासघात (The Result)

पठाण सरदारों ने युद्ध के समय धोखा देने का गुप्त समझौता किया।

> **"हिंदुस्तान में सोना और चांदी ही गठबंधन का सबसे पक्का आधार हैं।"**
>
> ऐतिहासिक स्रोत: भारत के इतिहास के नोट्स, पेज 36

जिंजी का युद्ध और नासिर जंग का पतन (1750)

धोखा

युद्ध शुरू होते ही पठाण सरदारों की सेना पीछे हट गई और उन्होंने फ्रांसीसियों से लड़ने से साफ इनकार कर दिया।

मृत्यु

नासिर जंग ने गुस्से में आकर उन्हें 'कायर' कहा। जवाब में, कुडप्पा के राजा ने अपनी बंदूक से नासिर जंग को वहीं गोली मार दी।

वीभत्स अंत

नासिर जंग का सिर धड़ से अलग करके भाले पर टांग गया और मुजफ्फर जंग के सामने पेश किया गया।

नया सूबेदार

विजेता मुजफ्फर जंग को तत्काल दक्कन का नया सूबेदार घोषित किया गया।

डुप्लेक्स की जीत और फ्रांसीसी सत्ता का शिखर

Wealth & Power Dashboard

Retmeitiors of gratitude from Muzaffar Jang

अतुलनीय धन (Cash)

डुप्लेक्स को व्यक्तिगत रूप से £200,000 (दो लाख पाउंड) और भारी मात्रा में कीमती आभूषण मिले।

विशाल क्षेत्र (Territory)

पांडिचेरी के आसपास के 81 प्रमुख शहर और उनकी आय फ्रांसीसी कंपनी को सौंप दी गई।

असीमित रुतबा (Influence)

चंदा साहेब को आर्कोट के नवाब के रूप में अंतिम और आधिकारिक मान्यता दी गई।

Synthesis Insight:

परिवर्तन (The Shift): यूरोपीय अब केवल तटों तक सीमित व्यापारी नहीं रहे; वे अब दक्षिण भारत के आधिकारिक 'किंगमेकर' बन चुके थे, जो राजाओं की किस्मत तय करते थे।

निष्कर्ष: नियति का खेल और महत्वाकांक्षा की कीमत

Synthesis Matrix

मुजफ्फर जंग का अंत (1751)

यह जीत अल्पकालिक थी। जिन पठाण सरदारों ने उसे गद्दी दिलाई थी, उन्होंने ही असंतुष्ट होकर विद्रोह कर दिया। युद्ध में एक भाला मुजफ्फर जंग के सिर को भेद गया और उसकी मौत हो गई।

असली विजेता (The True Cost)

भारतीय शासकों की अंतहीन महत्वाकांक्षा, लालच और विश्वासघात ने यूरोपीय कंपनियों के लिए भारत की सत्ता के दरवाज़े खोल दिए। नवाब बदलते रहे, लेकिन सत्ता पांडिचेरी और मद्रास चली गई।

Final Statement

इतिहास गवाह है: मोहरे बदलते रहे, लेकिन बिसात पर अंतिम नियंत्रण बाहरियों के हाथ में चला गया।

NotebookLM